









॥ विष्णुसनात्रु ॥

नरु मेमिव सुप्रवा कलंक मलं ॥ का ला ॥ सदु जानंद का लिः  
का ॥ आ व ॥ निखिलं कि न ह दया ॥ ला द सं द यं ॥ की ला ॥ नरु न  
मरु कु सा ला ॥ ला क जा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वा ग ॥ अ म रु व वि  
विश्व मे नो न ह वि धु वि वा ॥ अं का व वि या पि न सु म ह वा ॥ क  
॥ न सा ॥ मि ३ वा गी ॥ व ॥ स य व सु नि ह द या ॥ वि वा सा यि कु टा  
ग म व ॥ स ना ह व कि न ह द या ॥ ॥ पी न नि वा प्र ॥ सी न व य

॥ सनात्रु ॥

न ॥ प य ॥ कि न म कू ट ॥ म रि प्र य ना ॥ ॥ ध म ॥ अ क म ड क  
॥ ले ग ॥ वा मि ॥ घ ॥ अ वा पा यि ॥ पु ॥ रु रु व सु पा यि ॥ ॥ स य ॥ स य  
न ॥ मि न ॥ व व व र ॥ रु न ॥ यि घ व मा दि व रु ॥ कि न ॥ गु ॥ ल य न  
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वा ग ॥ रु व वि ॥ म ध्व ॥ म न ॥ स हा ॥ स नि क न क ना ॥  
कि न ॥ य व ॥ वि द ह ॥ अं व ॥ दि य ॥ ॥ य प ॥ न ॥ म ॥ डा ॥ य न ॥ ड ॥ रु ॥ व रु ॥ रु व न  
य ॥ अ ॥ कि न ॥ वा ॥ पि या ॥ ॥ ॥ ॥ न म ॥ य ॥ अ ॥ व ॥ रु ॥ वि ॥ म ॥ सु ॥ कि न ॥ वि

॥ य ॥ ॥ ॥



五

(वकुदगना)



श्रीभानुदत्तः । पञ्चवक्त्रं चतुर्वर्णं सप्तधनुषं दवाः सप्तनयः

प्रमृदिनरुदया ॥ ॥ ॐ श्रीः ह्रीं क्लीं स्वधनको नमः ॥ ३ ॥

मृद्यल्लधानां विप्रसादानंदः ॥ ८८ ॥ प्राग्वहं विप्रसादं ॥

निर्माणां च बहुषां च दल. सदा प्रहसन् श्रमककां दहन् मादय

॥ य २ समाज योत्र न तादृशमासा न न वना वसन्ता यक्ष जा व न न

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । वसुदेवाय नमः । कुरु कुरु यरु

नष्टवसमस्तद्वीरुडादिशानपूर्वविप्रिकामनूपयथाह

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

प्रधम्मोत्तकु आत्तमेदलसंशारात्तकु २ आत्तमेदलकेमलसः

सुखं च कुरुकायं च पञ्चाननं च ॥ ५८ ॥

नां वशां त्रिंशत् नयानशेदां निग्रहं मृदुं कथं प्रयाजादवृषीर्यो

ॐ। देवमसामि सुगन्धपूजा निदिन हन दायनी वा भिम्बनी।



२४८ आभिमर्दिन

[illegible][illegible]

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः







मस हनूत कथिया १ वडवा प्रादि आतिंदास संवत्र द्रव्ये  
 या ॥ ॥ छुति संवित्रां वित्र भवत स कदि कदि कदि नदि  
 अरु मभा न १ अरु न न म द द व व ड आ उ म द वी मि वी त  
 रु य न सं हा व ॥ ॥ छि रू व न रु क्त च क प्रा य रु या आ वि  
 रु व न रु क्त च क वि वं वी प्रा १ छि रू व न न त न न म सं घ भा दि य  
 रु तिं ग य १ उ च को चो को ॥ नि ॥ अ हि ति सं म न गु नू वा नं रु

नाम सुदिं ग य न हा व नू रा व १ उ म म म य रा रु य वं घ न सु दिं ग य  
 व रु य मा नू अ नि य सं हा व ॥ ॥ ००० ॥ या रा ल नि न ॥  
 अ नू रु व न थ ना वं का य रा व न त वू प विं ति न वि धि रु क्त स १  
 उं आ १ रु का व व जा म न म द क सं भा धि रु क्त ना मू न म य ॥  
 ॥ व द्या मू न व स वा धि रु त द्या य कं स र्व डि न व्या पि न स ह रु  
 क्त स १ उ म न म रु आ धि रु मु त्वा क प्र स रु वं सं सा ज ना म न







[illegible]

हि यद्वदन्त सत्त्वमर्हः ॥ ॥ ॐ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 प्रोक्तं ॥ त्रिचक्रवर्तिनः सत्त्वमर्हः ॥ त्रिचक्रवर्तिनः सत्त्वमर्हः ॥  
 १ वक्तव्यं हि श्रीलक्ष्मणसत्त्वमर्हः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ८ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥







इष्टायाहिष्ठुक्ताविन्दप्रतिगुंक्षय

[illegible]

पुनः पुनः मन्त्रि कूल बहियान् उडियान । स नरेश

सहस्रं च नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ब्रह्महर्षद्विषयकं नमो भगवते ॥

[illegible]

**उवीरः**

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥



मन्त्रसूक्तम्

मन्त्रोक्तिः निहितात्मानं नीलसमदहा? कर्कशप्रति। नयनी, शिवः

अविवेकानन्द



वदता। उर वातनाहं हं न नाहं हं हं हं नाम भूचक्रा

कृष्णानि विरुचननाथः । बहनिहरवप्रसूतुय इमाल

लं कृतमैरा? कृतविद्यां विन वल्लह लदायकं ॥ ५१ ॥

२०. ॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥ श्रुत्वा निनिदिशन् वास जातु तद्भुक्तिरसः ॥

सा. २ सं. ५५ २ नाम च स माह वं वि द्र पा सा वि ह व न बा या ऊ च २

विद्याया ॥ नमामिष्टाचरुमहाबाय ॥ ज्ञानमय ॥ रुचयः ॥

दिना? विश्वनाथसिंहज्यायिक विरचितेकमुसमहाकादजाया

॥ अहिरिषतामा उर्ययवका इव कवाया त्रिभुविदिन

ना १. थिंदित मृदु माय, क क न न य ना, वै वि सं ज मा, या वि रु स य

॥ सा धरमाया सुदं दन बुद्ध्या बुद्ध्याय ॥ सा धरमाया सुदं दन बुद्ध्या बुद्ध्याय ॥



२५  
२६  
२७  
२८  
२९

समस्तसत्तामनामिना सा ह्यनयासाहो न दहाय  
॥ २ ॥ ह्यः प्रकाशितसौत्रिकद्वयना प्रवृत्तं सनका  
नवननामोदकवदसा यद्यसुप्रवृत्तं नृदयकोदा ॥  
॥ ०३ ॥ नारायणवदिकु सुलकालीयक साहल्यवि  
न प्रीत्यमृतनसि वसा ॥ २ ॥ मित्रवादिचकी रेखा हस्यविरुपि  
मयासाकभादेव प्रियमासा ॥ ३ ॥ पुरुषाणां हनूनाः सः

मानकावाया ह्यनायसा स ह्यनयासा ॥ ॥ ४ ॥ कनका न क  
साधय विद्या कं प्रदि या ड ह्योना ॥ १ ॥ संयुटायामिनी कसलवि  
सासंसा न ससा सखि स नृसाद ॥ ॥ ५ ॥ वरुना सादि आलिंसा  
न सयुननाय विवह विविह नरं ॥ १ ॥ वाद्यविद्यो विनेया विदीन  
द नृन मृद हवह नसा पुमाद ॥ ॥ ६ ॥ सहस संवृति रेखा स  
मिने क ह्यपाल ग्राह नृक चनसा पुमाद ॥ १ ॥ पुरुषाणां लिङ्ग न ह्यदमि



२७  
२८  
२९  
३०

हनुवविमसुविभूत्यकद्रुसव  
युक्तलिमर्ककायुहमनूदिष्टुदुनीलसमद्रुनिदलविः  
मधुकरिभुमिष्टिकनवंकुठामकुरुकुठायिदं ॥ ३० ॥  
मिष्टायवदुवीरंरुवसिंधुतवर्षविधनाथकिरुवतव्यापि  
नावद्याविधंसनकवर्ष ॥ ३१ ॥  
वीरंसुगच्छुखरुवकअवि० वामनकुनीहदिवा ॥ ३२ ॥

३१  
३२  
३३  
३४

आहावंतमकवर्ष ॥ ३३ ॥  
हयिनदहा ॥ ३४ ॥  
विद्यापिपानेसर्वरुयहवर्ष ॥ ३५ ॥  
समरु ॥ ३६ ॥  
वसहालिंमनसुक्तसिधमा ॥ ३७ ॥















ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ३०

[illegible]

प्रसाध्यायेकः २ सप्तमस्तु सप्तमस्तु काभिनस्तु सप्तमस्तु  
 यिका ॥ ॥ घटं गजानं वन साधिनं चक्रवर्तिनं सप्तमस्तु सप्तमस्तु  
 विना ॥ ॥ मेर्मल हया चक्रवर्तिनं श्रीहर्षिनिशि चक्रवर्तिनं सप्तमस्तु सप्तमस्तु  
 नः ॥ ॥ गजानं वन साधिनं चक्रवर्तिनं सप्तमस्तु सप्तमस्तु २ पत्र सा विना  
 मा न सुदिनं सप्तमस्तु सप्तमस्तु सप्तमस्तु सप्तमस्तु ॥ ॥ हचक्रवर्तिनं  
 कृष्णचक्रवर्तिनं सप्तमस्तु सप्तमस्तु सप्तमस्तु सप्तमस्तु ॥ ॥ हचक्रवर्तिनं  
 श्रीगिनि साधिनं सप्तमस्तु सप्तमस्तु सप्तमस्तु सप्तमस्तु ॥ ॥







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 अथ श्रीभक्तिसूक्तम् ॥  
 यदा यदा ध्यायेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा विचार्येत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा स्मरिष्येत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा कुरुष्वेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा व्रजिष्येत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा शिरसां प्रक्षालयेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा पादौ च्छस्त्रेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा हस्तौ च्छस्त्रेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा मुखं च्छस्त्रेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥  
 यदा यदा शरीरं च्छस्त्रेत्तदा भगवत्पदं लब्धम् ॥

[illegible]



























[illegible][illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वनसमन्ततः प्रोत्तुं जगत्सिमाना १ रुनयि भूमाय वरुणीन  
वनिता ॥ ॥ ॐ ॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ अथ वनस  
हासिन विजया १ वरुणासत्वरुधासिना वासासत्वरु  
॥ नमो भगवते वासुदेवाय १ रुनादिदेवन रुनादः  
॥ ॐ ॥ रुनवदवापिता ॥ ॥ यस्तु कथनं सत्तमं सत्तु  
ननाथा १ गुणमर्धमं रुना नयात्तमं तुल्यं रुना ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ रुनात्तमं वासुदेवात्तमं ननु नलासा १ सर्वमस्तु विमलं य  
पात्तुं ननु ननु ॥ ॥ ॐ ॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ अथ वरुणीन  
मानं, ननु सत्तमं वासादिनात्तमं, ननु रुनात्तमं १ रुनात्तमं  
मानं, ननु सत्तमं वासादिनात्तमं, ननु रुनात्तमं ॥ ॥ ॐ ॥  
॥ यस्तु कथनं सत्तमं सत्तु ननु वासुदेवात्तमं, दिमां विदिमां वलिद  
वालिद १ रुनात्तमं, ननु रुनात्तमं, ननु रुनात्तमं, ननु रुनात्तमं











यत्तन्नामि वृणामलला कश्चिदव २ सिद्धायागिर्वधुदरूप  
 त्रिकमलाया रुवयानि वृणामसिनत्र द्रुदवं ॥ यानि  
 कमलविकाभिन्नोपधियात्र वामकमलहाथ २ तुक्कसमवंन  
 प्रागकृष्टदात्रेद्रुद्रुवरुयहवर्ग ॥ ॥ हं हं हं रुगावनि  
 कायारुगवन तन्नामि वृणामलला कश्चिदव २ तन्नामि  
 तन्नामि आनत्र द्रुदवस्वर्गमेधया नालदवं ॥ ॥ दमरु

२५  
 सिद्धाणिमनलकुरुधप्रियाऊगननाधग्रुयदाना २ आश्रमि  
 नारुवाभिप्रगनधप्रिया आलाभप्रमप्रसंगानि ॥ ॥ २०  
 ५० ॥ नाना २ प्रवि ॥ गऊकिनड २ हाथधप्रिया कमलकालिभ  
 २ मूर्धवात्रि २ उमत्रुकरानिकू ० अत्रिभूत्र वामदक्षककयालः  
 धवया ॥ ५ ॥ आसम्भ्रवत्राया वाहप्रिनुक्क २ गुपीना २ मात्राधि  
 प्रवायधिमात्रायेमाया सासूरुवंकु मूडावीना ॥ ॥ या भः



भुक्तमृदुवाममहाथाप्रिया उद्विग्नमिगमात्ता **र** वीलहविः  
 नलाकिनकनकाहवचउमखभक्तिविकलात्रभुक्तवा  
**र** आत्रिष्टपुआहप्रववायसियात्र. कातिवादिविहम  
 दा **र** वेम्भकुलिमभुक्तचुङ्गायुक्तवायुवर्मभुक्तमृदा  
**र** हृदि संविनवीप्रभप्र. नायकानिमित्तकमहावीन  
 वीरा **र** कप्रसभेभप्रविनवीप्रभप्र. उङ्गायुक्तसयप्रसंसाधन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ६३० ॥ वनप्रभुतांगे ॥ दं विनिसनवनविनिसाथिक  
 थिर **र** ३० हवाज. सलुत्तवाया ॥ **र** ॥ प्रहंकावहमप्रह  
 गतासिवाशियाप्र ॥ **र** ॥ अमिप्रममिप्र. निवंकनदभ **र** ॥ स  
 हकसंदमिवाया. किनरूनकमिस ॥ **र** ॥ प्रवडयामान  
 प्रवसप्रमोप्रिया **र** वरुवाजादिश्रुतिगतकाल ॥ **र** ३०  
 हवाज. कनसकवा. लि **र** ॥ रुयंरुयंममिहृदनीलावकवा



३३  
३४  
३५  
३६  
३७

सर्वस्वमात्रागडसुखादिनयनि बांद तयदमा. नृणां विप  
निषासंभवा २ ससिमुक्ता नलाह नक्ष. त्रुषी कि नन संका  
सा ३ ५ मात्रिया विद्यमात्रियादय. मात्रियादुष्टवि  
नामनं २ मात्रिया माला. मालसंगुभा. त्रुषय दष्टनोमि  
त्या ॥ ॥ यत्र गुरुवां कुरु तुरुव न. हिंदि पात्र दहि न  
कया २ सुसत्रधनरव हों. यद्यत्र कुरुवा म ॥ विवि

३८  
३९  
४०  
४१  
४२

ववत्यु. कं वृकादिदमा कटा इक्षुमसि सा छिना २ लंयादनय  
म. लंयादनय हा. यद्यत्र सिनिमिनि वा कं न ॥ २ ला त  
मथ. न नला कालिना. मुनि क मरु मनि संदनां २ दिनादला क  
मसुखदाता. नम सु नमा सु मलाधियनि ॥ ४-३०४-  
नम. ली ॥ यद्य कया ल. आत्रे म मोत्रे. यद्य सु म क मयु  
नम २ नम मि नमाला वा व माला. वा पुच म कुरु विनवद







गजउडयागिशा ७ लमस सलिया २ वरु वा मोहि सभिंगे  
 काय ॥ ७३० रुवा नाक म क वा नि २ रुवं २ मृगं र  
 मनी ला क भू वा नि ॥ ॥ ७३१ रुवा नाक म क वा नि २ रुवं २ मृगं र  
 सि रु फे द ल स वा का दि न क म स रु ल म वा नि २ व क ध  
 मा द या उ दि या ना द वी सु ल क मा दि या व वा ७ ॥ पु  
 मा मि वा रु दि आ व ड या नि नी मृ न रु म मा मि पु दा य नी ॥

३० रुद्राक्षकर्मकवात्रिंशत्संश्रुतिर्ग

मनीलाकृवापि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सिद्धिदलसमाजादिनकरसमुत्तमधरिवात्रकध

भादशा उदिमा नादवी मुक्तक मादिगोत्रवा ५५ पु

मासि दारुदि आ वज्रादिनी अतः कृष्णसिद्धिदायनी ॥

दिहृजगुरुमुखविमिलचुनाल्लारिनवर्षयुक्तानिला २५  
 हवतव्यापिनिदारेनकर्तुं भापि, मरुपुत्रिककपालधा २६  
 ॥ वज्रकुण्डकर्तुं भापि, हाथ्याचकोदराधिनी २७  
 सनीयुवकाः यययलातयसालाविरुधिना २८  
 मरुतनीययमगुच्छ २९, हवतयनायसिदीप ३०  
 हमानंदययिनी, यदी, अदि सिद्धि वल्लुदायनी ३१



[illegible][illegible]



चनारु ध्रुवनमादवीवृद्धाकिनीविश्वरूपमतीतिरु  
वनस्यापिन किमहं न दायिनी ॥ इति नेकनाचिका  
मिरुदधकिरु वामकभोटक च तुस्पायप्रसाधिवस्ये ॥  
नयूसिमलुतसाभ उदेया न गमन ॥ चलनोपयत्तदा न  
पुत्रमिसा ॥ आ विद्या धर्मददी सजन प्रसाहिता ॥ स  
कल्पदिशि सिद्धि दाहे स साता ॥ ५६७ ॥ याग यज्ञ वि

अथ क्रुण्वा लादे गोविदिगं रु वन. घी ति य मा ल च रु नें ए ग र ग  
ग स भ व य रा ग स भ नं म नं का वा. ग ग स उ म प्र घ ल द्या डे स  
२॥ ७ ॥ हूं हूं न मा मि य थ जा कि नी प थ रु ग ति स न ज  
कि नी. स य स रु ग रु ग ना ॥ १ ॥ य च उ रु प्र या धि म द वि  
न. व रु उ व स वि पू मा ला दि पू रा छे ना २ जा कि नी टि पि नी  
व र सि क बा डा न धी न व ता य सं जा म व ध नी ३ ॥ सिं धि नी



ध्याचिनीईवकडनाकिनीखड्वांगयप्रभृश्रुंमहस्ता २ वडुजाके  
 नीयाववताप्रजाकिनीवखलजाकिनीचकुनदवी॥  
 किनऊननीदवीजाकिनीकुंरुपायप्रसप्रसयक्षमडाहवसः  
 विरुषिना २ खकडुनकवडुधरखड्वांगपाकयप्रसप्रसः  
 हानदवी॥ ॥ ६०३० ॥ वावा लालिन ॥ विरुषानिखयवि  
 ७ नयवतसंजाय ॥ हलसिचडाविनाहिकमल २ दहयिडेन

दिंवममिसत्रयिसूयंगकिताकिमिश्रासमयस्याससयनं  
 ७ धनममंरुधावकासवकहवडुसंवयविभ्रयय २ यः  
 यिपदुससंथाग्यसंरुयनिभ्यनासहजागानंदमयहनयय  
 ॥ वडुयय्यहभनकुंरुमभूतंतननाससंगीतिजडाख  
 धान २ रुगकडुखनाभनवाविहलदायकंथागभभ्रहोवह  
 दयं॥ ॥ सुप्रवाकहृधप्रियाभूजयवनकाविचसमिम







१ श्रीदेवमस्तुत

२ श्रीगणेशाय नमः

३ श्रीगणेशाय नमः

४ श्रीगणेशाय नमः

५ श्रीगणेशाय नमः

६ श्रीगणेशाय नमः

७ श्रीगणेशाय नमः

८ श्रीगणेशाय नमः

९ श्रीगणेशाय नमः

१० श्रीगणेशाय नमः

११ श्रीगणेशाय नमः

१२ श्रीगणेशाय नमः

१३ श्रीगणेशाय नमः

१४ श्रीगणेशाय नमः

१५ श्रीगणेशाय नमः

१६ श्रीगणेशाय नमः

१७ श्रीगणेशाय नमः

१८ श्रीगणेशाय नमः

१९ श्रीगणेशाय नमः

२० श्रीगणेशाय नमः

२१ श्रीगणेशाय नमः

२२ श्रीगणेशाय नमः

२३ श्रीगणेशाय नमः

२४ श्रीगणेशाय नमः

२५ श्रीगणेशाय नमः

२६ श्रीगणेशाय नमः

२७ श्रीगणेशाय नमः

२८ श्रीगणेशाय नमः

२९ श्रीगणेशाय नमः

३० श्रीगणेशाय नमः

३१ श्रीगणेशाय नमः

३२ श्रीगणेशाय नमः

३३ श्रीगणेशाय नमः

३४ श्रीगणेशाय नमः

३५ श्रीगणेशाय नमः

३६ श्रीगणेशाय नमः

३७ श्रीगणेशाय नमः

३८ श्रीगणेशाय नमः

३९ श्रीगणेशाय नमः

४० श्रीगणेशाय नमः